१२. अंग्रेज गोरे नहीं थे

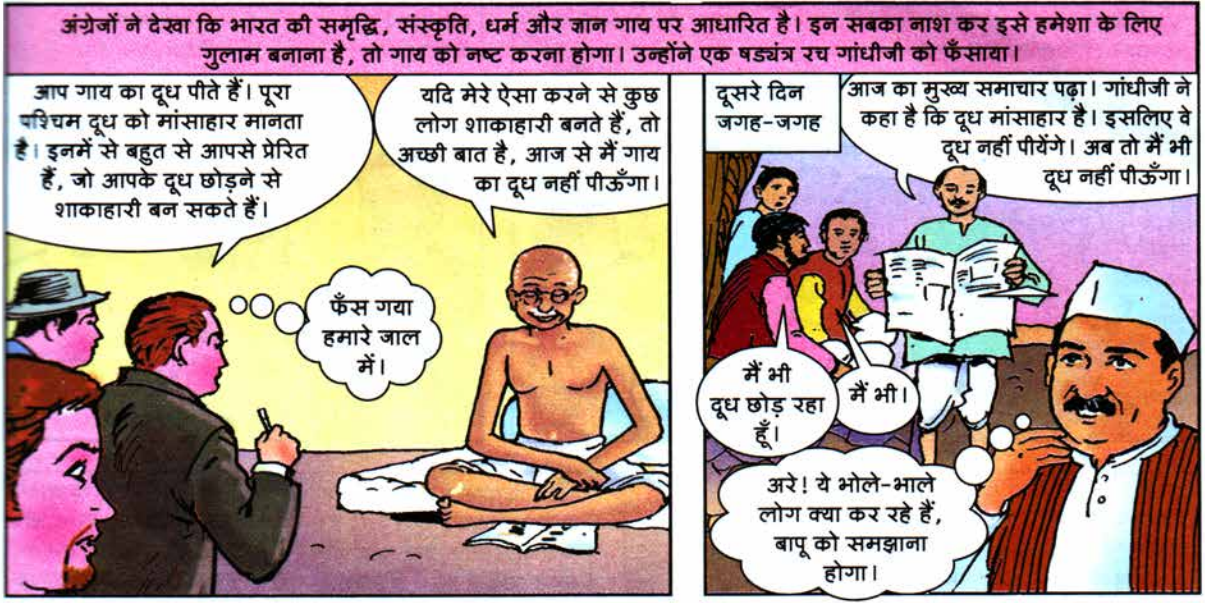
अंग्रेजों ने देखा कि भारत की समृद्धि, संस्कृति, धर्म और ज्ञान गाय पर आधारित है। इन सबका नाश कर इसे हमेशा के लिए गुलाम बनाना है, तो गाय को नष्ट करना होगा। उन्होंने एक षड्यंत्र रच गांधीजी को फँसाया।
आप गाय का दूध पीते हैं। पूरा पश्चिम दूध को मांसाहार मानता है। इनमें से बहुत से आपसे प्रेरित हैं, जो आपके दूध छोड़ने से शाकाहारी बन सकते हैं।
यदि मेरे ऐसा करने से कुछ लोग शाकाहारी बनते हैं, तो अच्छी बात है, आज से मैं गाय का दूध नहीं पीऊँगा।
फँस गया हमारे जाल में।
दूसरे दिन जगह-जगह
आज का मुख्य समाचार पढ़ा। गांधीजी ने कहा है कि दूध मांसाहार है। इसलिए वे दूध नहीं पीयेंगे। अब तो मैं भी दूध नहीं पीऊँगा।
मैं भी दूध छोड़ रहा हूँ।
मैं भी।
अरे! ये भोले-भाले लोग क्या कर रहे हैं, बापू को समझाना होगा।

बापू! आयुर्वेद दूध को माँसाहार नहीं मानता। आहार से सात धातु - रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र बनते हैं। इनको खाना मांसाहार है। आपके दूध त्यागने से करोड़ों भारतीय भी दूध त्याग रहे हैं। इससे लोग गाय पालना छोड़ देंगे, यही तो अंग्रेज चाहते हैं।
लेकिन मैं तो प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि मैं गाय का दूध नहीं पीऊँगा। अब मैं क्या करूँ? मैं तो फँस चुका हूँ।

तभी कस्तुरबा ने कहा
आपने गाय का दूध न पीने की प्रतिज्ञा की है, बकरी का दूध तो पी सकते हैं।
हाँ, यह सही है। इससे अंग्रेजों का षड्यंत्र असफल हो जायेगा और मेरा वचन भी झूठा नहीं होगा।
मजबूरी में गांधीजी ने बकरी का दूध पीना शुरू किया।

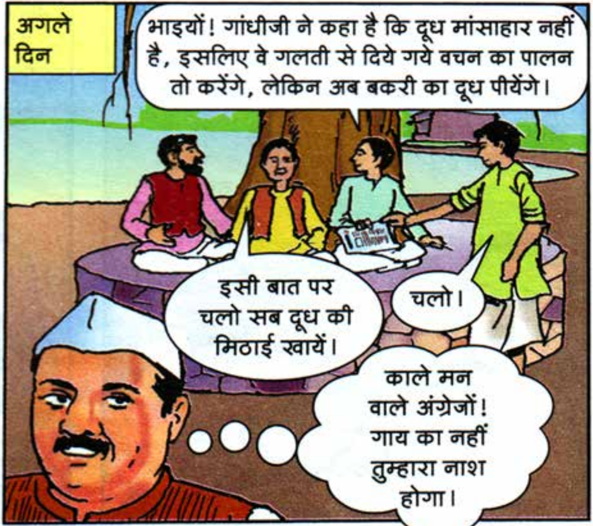
अगले दिन
भाइयों! गांधीजी ने कहा है कि दूध मांसाहार नहीं है, इसलिए वे गलती से दिये गये वचन का पालन तो करेंगे, लेकिन अब बकरी का दूध पीयेंगे।
इसी बात पर चलो सब दूध की मिठाई खायें।
चलो।
काले मन वाले अंग्रेजों! गाय का नहीं तुम्हारा नाश होगा।